

Water Conflicts in the Context of Increasing Urbanisation and Industrialisation

K. J. Joy
Email: joykjjoy2@gmail.com

Anil Agarwal Dialogues
Excreta Does Matter

4-5 March 2013; New Delhi

Pimpri-Chinchwad: Conflict over Pavana waters



त्रिव वाचविण्यासाठीच गोळीबाबा

लखाहिनीच्या विरोधातील आंदोलनाला हिसक वळण सागल्यानंतर पोलिसांनी आंदोलकावर जोरदार लाठीमार केला.

सकावी विपरीत अंदोलनाला हिसक वळण सागल्यानंतर पोलिसांनी आंदोलकावर जोरदार लाठीमार केला.

लखाहिनीच्या विरोधातील आंदोलनाला हिसक वळण सागल्यानंतर पोलिसांनी आंदोलकावर जोरदार लाठीमार केला.

तांत्रिक विवरण: ता. १ : "लखाहिनीच्या सुरु केले. असे कृत्य करण्याच्या जमावाने अचानक दगडफेका सुरु केली. काढू मी दगड उचलण्याच्या पोलिसांनी आंदोलनासाठी आमी टिकिकिकाणी ताखात पेणावत आले. पोलिसांच्या वाळानांना आंदोलकांनी गोळी झाडली. त्याकडे तेहील

Three killed in police firing on farmer stir on E-way

By: Kaumudi Gurjar Date: 2011-08-10 Place: Pune

Cops among over 20 injured as 500 farmers protesting against government's pipeline plan hold up Expressway traffic for over 10 hours near Talegaon

Police firing on some 500 farmers agitating on the Expressway at Talegaon yesterday claimed three lives and injured over two dozen others.

Ganga canal: Conflict over water for Delhi



Hirakud dam (Odisha): Conflict over increasing urban and industrial use



Mansi Wakal Dam and Udaipur city: Conflict over water transfers and PPP



**मांसी वाकल बांध बनाने का विरोध
मेधा पाटकर के नेतृत्व में झाड़ोल में रैली व प्रदर्शन**

उदयपुर, 24 दिसंबर (नवं)। नुधार को जन आंदोलनों के गांधीय समर्थन की नेता मेधा पाटकर के नेतृत्व में झाड़ोल में मासीवाल के विरासती ने पुलिस दबन व बांध के विरोध में रैली निकाली तथा एस. बी. ओ. कार्यालय के समस्त प्रश्नों किया। मेधा व मासीवाल के विरासती ने सख्तर द्वारा पुनर्वास की अवस्था के बारे में, झाड़ोल को जल का खिलाफ देने आदि के बारे में एस. बी. ओ. झाड़ोल से सार्वजनिक तौर पर सवाल पूछे, जिनका बहु जवाब नहीं दे पाए।

नुधार को बरोड़वर किसान संघर्ष समिति के तत्वावादीन में मासीवाल के विरासती झाड़ोल में ढाक बंगले के समीप एकजित हुए। उनके प्रमाण में झाड़ोल व कॉटडा

रही है। मेधा ने कहा कि गांधी वालों से पूछे बिना तथा उनकी मंजूरी के बिना बांध का काम आगे बढ़ाना जनरेव के खिलाफ है। मेधा ने कहा कि गांधी वालों ने पूर्व में लिंक ऊपर विस्थापित करते वाले बांध के बारे में तकनीकी मूच्छाएं मांगी थीं, और सरकार ने नहीं दी, लेकिन अब ग्रामीण बहु बांध नहीं बनने देने के लिए संभालित हो गए हैं।

मेधा ने कहा कि यह सरकार ने मासी वाकल के विरासती का उनवास बीमलतुर योजना के अनुसार करने की चाही है, लेकिन बीमलतुर में सरकार ने लोगों के उनवास की कोई भवित अवस्था नहीं की।

सभा में मेधा पाटकर ने ग्रामीणों ने अपनी विरोधी विरासती

फोटो: राजेन्द्र विलायिया

दिनांक 10 दिसम्बर 1997

**अत्याचार का वीभत्स रूप
निहत्थे ग्रामीणों पर लाठी चार्ज
एवं गोलियां चलाई**

कल्याण सिंह शयसिया

जोगाणा। मासी वाकल बांध स्थल पर ढाक जाने वाले परिवारों के पुनर्वास को मार कर रहे निहत्थे ग्रामीणों पर पुलिस ने बंडहीं से लाती चार्ज किया तथा ज्ञानगंगा के विरोध प्रदर्शन को दबाने व भोइंग में भय पैदा करने के लिए विदेशी ने विरोध प्रदर्शन से कार्य में बाया बताया था। उसे दूर करने के लिए बातचीत व सर्वेक्षण के गार्ते से हट कर बिला प्रशासन ने भोइंग को तिर किया व लोलियां चलाई।

समाजों न नाहकर लोगों को जबरन बंदखली पर उतार हुआ। बताया था कि जोराया में मासी वाकल परिवारों को बाप का यहाँ के किसानों द्वारा भारी परिवेश के बापों के लिए बंदखलते रसा भाड़ील पैदा करना चाहते हैं विसंसे कि 8 वर्ष किलोमीटर क्षेत्र द्वारा में जाएगा। इससे लोलियां और छड़गांवों के लिए जो जाति भागी चुनाव से जोड़ कर भी रेख रहे हैं, समझा जाता है कि झाड़ोल-कटटा विधायिक सभा द्वारा कोर्स विधायक कुबेर सिंह है विसे भाजी व राज्य सरकार बद्धूर नहीं कर पाते हैं। इसके बलते रसा भाड़ील पैदा करना चाहते हैं विसंसे ग्रामीण संसदीय चुनाव में भाजपा का उम्मीदवार भारी पड़े।

Khandwa (MP): Conflict over PPP



ग्रुस्लिम पंचायत ने नर्मदा जल अधिसूचना पर उठाई गंभीर आपत्तियां

अनुबंध ही निरस्त हो

दिंदा जलप्रदाय योजना
नगर पालिक निगम
अधिसूचना पर
दर्ज करवाने का
प्रारंभ हो गया है।
मनीपुरा मुस्लिम
रेली निकालकर
पृथीवी आपत्तियों में
बिडु पर निगम का
सिंह कराते दृश्य विश्वा



Bhopal: Conflict over safe water, environment & justice



Chennai: Urban-peri-urban conflicts over groundwater



Delhi: Privatised service delivery and inequity



Khari river (Gujarat): Dumping of municipal wastes & industrial effluents in and around Ahmedabad



Conflicts mainly relate to:

- Sourcing of water
- Inter-sectoral allocation
- Inequitable access
- Pollution and water quality problems: dumping of untreated urban sewage and industrial wastes
 - The quality of return flows
- Reform process: Privatisation, mode of delivery, pricing
- Resource colonisation: a case of unequal relationship between the periphery and the core
- Class, caste, patriarchy, ethnicity, rural-urban divides, geopolitics all map on to water

Increasing urban and industrial demand

- Increasing importance of urbanisation
 - Growth in urban population
 - Increasing urbanisation of rural aspirations and lifestyles
- Domestic and industrial water use:
 - In 2000: about 8% of total water use
 - Projected for 2050: about 20% of total water use

Water justice, equity and conflicts

- The issue of justice is central in all types of water conflicts:
 - Equity within a particular water use or sector
 - Allocation of water across different sectors
- Water justice issues are different in both these scenarios
 - Equity within a particular sector shows how egalitarian the water distribution norms and practices are
 - Allocation of water across different sectors is related to the developmental pathway

Diversions and re-allocations

- Increasing diversions of water from agriculture to industries and urban use
- Maharashtra experience:
 - In 2003 the government limited the powers of the Irrigation Department to reserve water for non-agricultural use to 25% of the storage in the dams
 - Set up a High Power Committee with the powers to sanction demands for reservations for more than 25% for non-agricultural uses
 - About 1500 Mm³ of water has been diverted from agricultural use to urban and industrial use from 2003 to 2011
 - Affecting about 250,000 ha of irrigated agriculture

Way forward

- Access to exogenous water to cities should carry conditionalities:
 - The conjoint use of local and exogenous water in a definite proportion
 - Equitable distribution and access: assurance of 'lifeline' water to all
 - Efficiency in use
 - Treatment of effluents, recycling and re-use
 - Part of the water tariff to be earmarked for protection of local water bodies, the exogenous sources and their catchments

Way forward

- Water for industries
 - The nature of the industrial entity like size, ownership structure, products, pollution impact and extent of reuse/recycling of water should be considered in deciding allocations to industries
 - Industries should show that all other measures like recycling and re-use, efficiency measures in processes, local water harvesting are all exhausted
 - Water for industries should not be at the expense of livelihoods of the peasantry

Way forward

- The issue of privatisation
 - Privatisation of water sources and entitlements
 - Privatisation of service delivery
- Whatever be the mode of provision, there should be certain non-negotiables:
 - Meeting of basic (lifeline water) of all and the water supply conditions to be included in the legal instruments
 - Clear institutional and legal mechanisms for redressal

Way forward

- Knowledge based dialogues for negotiated settlements
 - Flexibility and periodic consensus process
 - Need for institutional space
 - Science-policy-stakeholder interaction (SPSI)
 - Need for public hearings prior to diversions and reallocations
 - Access to reliable data
- Need for piloting in an action research mode



- Websites:

- [URL://waterconflictforum.org](http://waterconflictforum.org)
- [URL://conflicts.indiawaterportal.org](http://conflicts.indiawaterportal.org)